United International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 3048-6726 (UIJMR) Impact Factor: 6.934 (SJIF)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
www.uijmr.in Vol-3, Special Issue-II ,2026

संत साहित्य में ज्ञान के विविध आयाम

[1]**Dr. B. Laxmi ,**HOD Hindi Associate Professor
[2]**Dr.V.S.Krishna** Govt. Degree College (A)Visakhapatnam A.P.

हमारी संस्कृति का मूल आधार ज्ञान है। वेदो-पुराणो में धमम, अर्म, काम और मोक्ष का मुख्य आधार ज्ञान को ही माना गया है। हहन्दी साहहत्य के इतिहास का स्वणम युग भक्तिकाल है, क्िसमें संि कववयों ने अपने अनुभव, ज्ञान और समिा की परंपरागि ववडंबनाओं को स्पष्ट रूप से अपनी वाणी में प्रस्ि्ि ककया है। संिो की ज्ञानात्मक भक्ति मात्र आक्त्मक साधना में तनर्लमप्ि भक्ति का स्वर नहीं है, बक्कक उसमें िीवन-दर्मन, नैतिकिा, सामाक्िक सुधार और आध्याक्त्मक ज्ञान के वववव‍ध आयाम समाहहि हैं। संि साहहत्य का सबसे बडा गुण समवपमि ववचार और मानविा की रक्षा है, क्िसके िनिा के ककयाण हेिु मागम प्रर्स्ि करिा है। इस प्रकार संि साहहत्य का ज्ञान केवल बौद्धधक या ्ास्त्रीय नहीं अवपिु िीवन को सानुकूल आगे बढाने का ज्ञान है ।

- संत साहित्य का स्िरूप और मित्ि - भक्ति आंदोलन के अंिगमि संि साहहत्य ववकर्सि हुआ क्िसमें तनगुमण और सगुण दोनों प्रकार की भक्ति िनिा की िीवन-र्ैली और िनिा के िीवन का अर्भन्न रूप बन गयी । कबीरदास, दादूदयाल, रैदास, नामदेव, गुरुनानक, मीराबाई, िुलसीदास, सूरदास आहद संि कववयों ने अपने-अपने दृक्ष्टकोण से िीवन और ईश्वर का धचत्रण कर सामाक्िक कुरीतियों, धार्ममक पाखंड और अंधववश्वास का िीव्र ववरोध ककया। तनगुमण संि कववयों ने ईश्वर को तनराकार माना और आत्मज्ञान को महत्व हदया। सगुण संि कववयों ने ईश्वर को साकार रूप में देखा और भक्ति को सुख, ्ांति, समिा िर्ा समृद्धध के मागम के रूप में देखा।

- आध्यात्त्मक ज्ञान का आयाम - संि साहहत्य का मूल आधार आत्मा और परमात्मा का परस्पर संबंध है। संि कववयों ने आत्मा की ्ुद्धध और ईश्वर से र्मलन को िीवन-दर्मन का मूलस्वरूप बिाया है। कबीरदास के तनम्न पद्य में स्पष्ट होिा है कक भगवान बाहरी हदखावे या पाखंडों में, ढोंग में नहीं है बक्कक मनुष्य के अंिममन में है –

"मोको कहाँ ढूँढे रे बन्दे, मैं तो तेरे पास मं। ना मैं मंहदर, ना मैं मत्स्िद, ना काशी कैलास मं॥"

गुरु नानक की वाणी **सत्य, कततव्य और सेिा** के स्िंभो पर आधारिि है। ज्ञानाश्रयी ्ाखा के संि गुरु नानक की बाणी में भारिीय और सूफी ज्ञान परंपराओं का समन्वय हदखाई देिा है। गुरु नानक ईश्वर को तनराकार और सवमव्यापी मानिे हैं क्िससे अद्वैि और एकेश्वरवाद की परंपरा को द्ृढिा र्मलिी है।

"एक ओंकार सतनाम, करता पुरख, ननरभउ, ननरवैर।"

प्रस्िुि पंक्ति में प्रकृति को पूज्य गुरु और मािा-वपिा के रूप में देखा गया है। यह भारिीय परंपरा के **प्रकृनत-प्रेम और पयातिरणीय ज्ञान** का संुदर उदाहरण है।

पिन गुरु, पानी वपता, माता धरत मित।"

United International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 3048-6726 (UIJMR) Impact Factor: 6.934 (SJIF)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
www.uijmr.in Vol-3, Special Issue-II ,2026

नामदेव महाराष्ट्र की वारकरी परंपरा के संि हैं। उनकी वाणी में भगवान के **नाम-स्मरण, भत्तत और उनके सितव्यापक स्िरूप** का ज्ञान मिलिा है। नामदेव के अनुसार ईश्वर बाहर नहीं, भिीर ही ववद्यमान है। यह उपतनषदों की "अहं ब्रह्माक्स्म" और "ईश्वर सवमत्र" की ज्ञानपरंपरा से िुडा ववचार है।

"किो रे बन खिोन िाई
सित ननिासी सदा अलेपा, तिोी संग समाई।"

मीराबाई ने िीवन में परम ज्ञान का आधार भगवान के प्रति प्रेम और भक्ति को माना है इिस प्रकार है :

"पायो मैंने िी, राम रतन धन पायो।
िस्तु अमोलक दी मेरे सतगुरु, ककरपा कर अपनायो॥"

- **सामात्िक ज्ञान का आयाम-** संि साहहत्य में संि महात्माओ ने समाक्िक िीवन में व्याप्ि ढोंग, अंधववश्वास और वगमगि भेदभाव का ववरोध ककया है। कबीर ने प्रस्िुि दोहा में स्पष्ट ककया है कक समाि में िाति व िगम भेद का कोई मूकय नहीं है अवपिु ज्ञान ही महत्वपूणम है I ज्ञान के अनुसार ही मनुष्य का मूकय है I

" िानि मि पूछो साधु की, प छ लीत्िए ज्ञान। मोल करो तलिार का, पडा रिन दो म्यान॥"

- **नैनतक एिं व्यािहाररक ज्ञान का आयाम -** संि साहहत्य में िीवन के आदर्ों और नैतिक मूकयों पर बल हदया गया है। िुलसीदास मनुष्य के व्यावहाररक ज्ञान के संदभम में कहिे है कक दूसरों की भलाई करना हमारा परम धमम है और पीडा देना सबसे बडा अधमम हैI -

"परहित सररस धमत नहि भाई। परपीडा सम नहि अधमाई॥"

- **दाशतननक ज्ञान का आयाम -** संि कववयों ने वेदांि, योग और सूफी ववचारधारा को सरल भाषा में प्रस्िुि ककया। दादू आक्त्मक ज्ञान के संदभम में कहिे है कक हर इंसान में एक ही आत्मा ववद्यमान है I -

"दाद देख पराई आभा, अपनी आभा िान। सब में एकै ज्योनत िसब में एकै प्राण॥"

- **सांस्कृनतक एिं लोकिीिन का ज्ञान -** संि साहहत्य लोकभाषा में रचा गया साहहत्य है क्िसके कारण यह िनमानस से िुडा रहा। इसमें लोकगीिों, प्रिीकों और कहाविों का प्रयोग हुआ है।वात्सकय रस के सम्राट सूरदास ने लोक िीवन की सहििा और बाल लीला का वणमन ककया है I –

"मैया! मोहि दाऊ बिुत खखझायो।
माखन खाय ब्रि में सबको, मोहि दोष िुि दायो॥"

महाराष्ट्र की वारकरी परंपरा के संि नामदेव हैं। उनकी वाणी में **नाम-स्मरण, भत्तत और ईश्िर के सितव्यापक रूप** का ज्ञान मिलिा है। नामदेव कहिे हैं कक ईश्वर बाहरी ढोंग में नहीं, भिीर के आक्त्मक ज्ञान में ववद्यमान है। यह उपतनषदों की "अहं ब्रह्माक्स्म" और "ईश्वर सवमत्र" की ज्ञानपरंपरा से िुडा ववचार है।

"किो रे बन खिोन िाई
सित ननिासी सदा अलेपा, तिोी संग समाई।"

कबीरदास, मीराबाई, ि ुलसीदास, सूरदास दादूदयाल, रैदास, नामदेव और गुरु नानक के पद्य और दोहे भारिीय ज्ञान परंपरा के यर्र्म स्वरूप हैं। इनकी वाणी केवल परंपरागि धार्ममक उपदेर् नहीं बक्कक लोकिीवन से िुडा अनुभविन्य ज्ञान का भंडार है। इन्होंने बाहरी आडंबरों के बिाय आंिररक ◌ुद्धिा, समानिा और प्रेम को ज्ञान का आधार माना। संि साहहत्य भारिीय समाि में आध्याक्त्मक चेिना और नैतिक मूकयों को स्् ◌ावपि करने का प्रमुख माध्यम बना है।

इस प्रकार संि साहहत्य में धचत्रत्रि ज्ञान के वववव आयाम, मानव िीवन मागम दर्मन के रूप में है, क्िसमें आध्याक्त्मक ज्ञान,नैतिक ज्ञान और सामाक्िक ज्ञान है I संि कववयों ने ज्ञान को सरल, सहि, सुलभ और व्यावहाककक रूप से प्रस्िुि ककया है I इस प्रकार संि साहहत्य मानविा ,प्रेम और सत्य मागम पर ले िाने वाला सच्चा ज्ञान देिा है I

संदभत ग्रंथ स ची -

कबीर ग्रं◌्रावली – सम्पादक: हिारी प्रसाद द्वववेदी
हहन्दी साहहत्य का इतिहास – डॉ. नगेन्द्र
रामचररिमानस – गोस्वामी िुलसीदास
सूरसागर – सूरदास
दादू वाणी – दादूदयाल
हहन्दी साहहत्य का इतिहास – आचायम रामचन्द्र ◌ुतल
भक्ति आंदोलन और संि साहहत्य – डॉ. रामस्वरूप चिुवेदी